ISSN 0973-2616

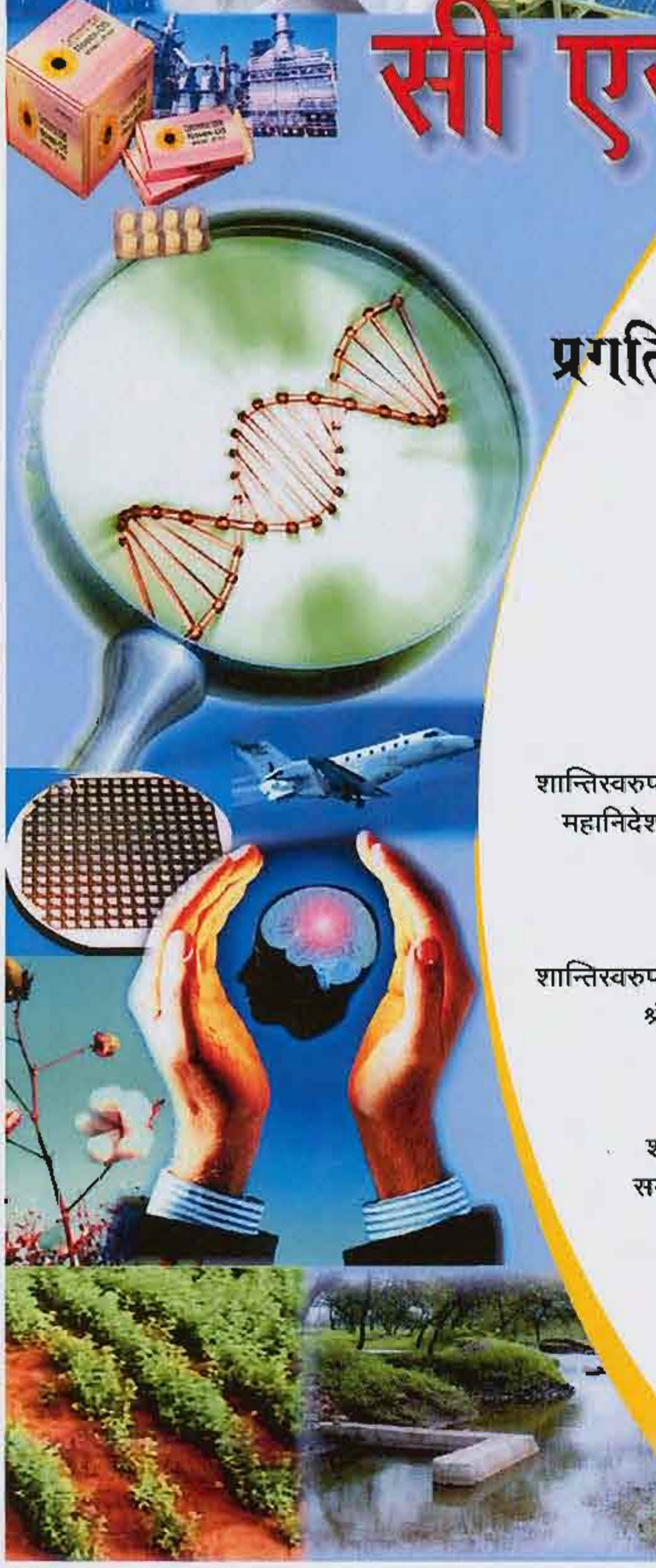

सी एस आई आर समाचार

प्रगति, विश्वास और आशा

वर्ष 27 अंक 11 नवम्बर 2010

इस अंक में

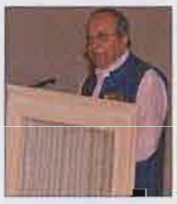

174
शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार वितरण समारोह में महानिदेशक, सीएसआईआर का अभिभाषण.....

176
शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार वितरण समारोह में श्री पृथ्वीराज चव्हाण का अभिभाषण.....

178
शान्ति स्वरुप भटनागर पुरस्कार वितरण समारोह में प्रधानमंत्री का अभिभाषण.....

179
शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार वितरण समारोह.....

188
सीएसआईआर टैक्नोफैस्ट-2010 को स्वर्णपदक.....

website: http://www.csir.res.in

शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार वितरण समारोह

20 अक्टूबर 2010

भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, जो वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष भी हैं, ने 20 अक्टूबर 2010 को विज्ञान भवन में आयोजित भव्य समारोह में वर्ष 2009 और वर्ष 2010 के शान्तिस्वरूप भटनागर पुरस्कार एवं ग्रामीण विकास के लिए एस एंड टी नवोन्मेष के लिए सीएसआईआर पुरस्कार प्रदान किए। इस अवसर पर तत्कालीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा भूविज्ञान राज्य मंत्री और उपाध्यक्ष सीएसआईआर श्री पृथ्वीराज चव्हाण, महानिदेशक सीएसआईआर प्रो. एस.के. ब्रह्मचारी के साथ-साथ पुरस्कार विजेता, उद्योग, शैक्षिक संस्थानों के अनेक आमंत्रित गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

महानिदेशक, सीएसआईआर का अभिभाषण

माननीय प्रधानमंत्री तथा अध्यक्ष, सीएसआईआर सोसाइटी, डॉ. मनमोहन सिंह, माननीय श्री पृथ्वीराज चव्हाण, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री तथा उपाध्यक्ष, सीएसआईआर सोसाइटी, पुरस्कार विजेता तथा उनके परिवार के सदस्य, आमंत्रित अतिथिगण, सीएसआईआर स्टाफ।

मैं आप सभी का भटनागर पुरस्कार तथा ग्रामीण विकास के लिए विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी नवोन्मेष हेतु सीएसआईआर पुरस्कार वितरण समारोह के सुअवसर पर हार्दिक स्वागत करता हूं तथा इस विशिष्ट अवसर पर आपको यहां एकत्रित होने के लिए धन्यवाद देता हूं।

माननीय प्रधानमंत्री महोदय, आज आपकी यहां उपस्थिति बहुत ही विशेष है क्योंकि यह एक विरासत है जो हमारे अन्दर निहित शासन के उच्च श्रेणीकरण में से एक पर विश्वास को प्रबन्धित करती है। पिछले दस वर्षों से भी अधिक समय से यह पुरस्कार भारत के प्रधानमंत्री द्वारा प्रदान किए जा रहे हैं जोकि सरकार द्वारा विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा अन्वेषण को दी जाने वाली प्रतिबद्धता तथा प्राथमिकता को दर्शाता है। धन्यवाद, महोदय।

भारत में विज्ञान प्रणाली जोकि व्यापक रूप से परमाणु ऊर्जा विभाग, जैवप्रौद्योगिकी, अन्तरिक्ष, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान, भूविज्ञान तथा अन्य द्वारा प्रदर्शित होती है, को श्री पृथ्वीराज चव्हाण जैसे मंत्री जोकि स्वयं एक इंजीनियर अनुसंधानकर्ता हैं, मिलने से बेहतर कुछ और नहीं हो सकता। वे प्रणाली को बखूबी समझते हैं तथा इसमें कार्यरत अनुसंधानकर्ताओं के लिए गहरी संवेदना रखते हैं। हम उनके प्रेरणादायक नेतृत्व के

लिए उनके कृतज्ञ हैं।

महोदय, आज हम 20 युवा भारतीयों तथा एक कम्पनी, जिसने विज्ञान तथा अन्वेषण के अनुसरण के पथ पर कुछ नये परिवर्तन किये हैं, को सम्मानित कर रहे हैं। वे हमारे विज्ञान के सर्वश्रेष्ठ को प्रदर्शित करते हैं। यह सर्वथा उचित है कि अब से उन्हें भटनागर पुरस्कार विजेता के नाम से जाना जायेगा। यह पुरस्कार एक महान भारतीय वैज्ञानिक डॉ. शान्तिस्वरुप भटनागर के नाम पर दिया जाता है, जिन्होंने महान संगठन - सीएसआईआर की नींव रखी तथा परमाणु ऊर्जा सहित अन्य कई संस्थानों की स्थापना तथा विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ग्रामीण विकास हेतु विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी नवोन्मेष के लिए सीएसआईआर पुरस्कार की स्थापना वर्ष 2006 में हमारी ग्रामीण जनता की बेहतरी के लिए अन्वेषण केन्द्रित तथा प्रौद्योगिकी चालित परिवर्तन लाने के लिए योगदान देने वाले वैज्ञानिकों को सम्मानित करने के लिए की गयी। यह एक ऐसा पुरस्कार है जो सीएसआईआर की छत्रछाया में किये जा रहे कार्यक्रम सीएसआईआर-800 का अनुपूरक है।

महोदय, भटनागर पुरस्कार की स्थापना वर्ष 1956 में हुई तथा वर्ष 1958 में पहली बार यह पुरस्कार दिया गया। अब तक 463 गौरवशाली भारतीयों को यह पुरस्कार दिया जा चुका है, जिनमें आज पुरस्कार प्राप्त करने वाले वैज्ञानिक भी सम्मिलित हैं। इन विजेताओं में 14 महिलाएं भी हैं। ये पुरस्कार 45 वर्ष से कम आयु के वैज्ञानिकों को जो भारत में सात वैज्ञानिक क्षेत्रों यथा, रासायनिक, जैविक, भौतिक, चिकित्सा, गणित, इंजीनियरिंग तथा भू, समुद्र, भूमण्डलीय तथा वातावरण विज्ञान में से किसी एक क्षेत्र में कार्यरत हैं, को दिये जाते हैं।

महोदय, जब मैंने यह कहा कि ये पुरस्कार इन वर्षों के लिए विज्ञान के सर्वश्रेष्ठ को प्रदर्शित करते हैं, यह चयन समिति द्वारा अपनायी गयी कठोर, पारदर्शी तथा वैश्विक रूप से समानता वाली चयन प्रक्रिया की पुष्टि करता है। यही एकमात्र कारण है कि वर्ष 2010 के लिए गणित, भू, समुद्र भूमण्डल तथा वातावरण विज्ञान के क्षेत्र में किसी वैज्ञानिक के नाम की संस्तुति इस पुरस्कार के लिये नहीं की गयी है। हालांकि प्रदर्शन की कमी उन लोगों के लिए कोई बाधा नहीं है, जो अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं।

प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर स्वागत भाषण देते हुए

आज, हमने एक मील का पत्थर प्राप्त किया है। सभी 14 महिला वैज्ञानिकों, जो वर्ष 1950 से अब तक इस प्रतिष्ठित पुरस्कार की प्राप्तकर्ता हैं, में से 30 प्रतिशत को आज सम्मानित किया जा रहा है। यह एक बहुत ही सकारात्मक प्रतिबिम्ब है कि अधिक से अधिक महिलाएं विज्ञान को कैरियर/आजीविका के रूप में अपना रही हैं। यह प्रवृत्ति इंजीनियरिंग की छात्राओं, जिन्होंने वर्ष 2009 तथा 2010 में सीएसआईआर के सर्वाधिक नवोन्मेष कार्यक्रम-पोस्ट ग्रेजुएट रिसर्च प्रोग्राम इन इंजीनियरिंग में कार्य करना आरम्भ किया है। यह वह कार्यक्रम है जो इंजीनियर अनुसंधानकर्ताओं यथा हमारे स्वयं के मंत्री जैसों को तैयार करने के लिए बना है तथा जिनकी आवश्यकता हमें हमारे राष्ट्र के निर्माण आधार को और अधिक सशक्त करने के लिए है।

यह भारत में उभरती महिला शक्ति का प्रतीक भी है जिसे अभी हाल ही में आयोजित राष्ट्रमण्डल खेलों में महिला धावकों ने सिद्ध कर दिखाया है। महोदय, मैं भारत के वैज्ञानिकों के प्रतिनिधि के रूप में आपका तथा माननीय मंत्री जी का सक्षम नीतियों तथा प्रणालियों का सृजन करने के लिए धन्यवाद करता हूं। वैज्ञानिक तथा अन्वेषण अनुसंधान अकादमी (AcSIR), राष्ट्रीय अन्वेषण परिषद की स्थापना; अनेक नये विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थानों और बायो-क्लस्टर्स, आईआईएसईआर (IIScR) आईआईटी आदि की स्थापना होना आपके सहयोग को समुचित रूप से इंगित करते हैं। ये संस्थान स्थानान्तरी अथवा समाधान विज्ञानाधार सृजित करने के साथ-साथ हमारी प्रतिस्पर्धात्मक निर्माण सक्षमता को बढ़ाने के लिए जनशक्ति प्रदान करेंगे।

यही वह सशक्त आधार होगा जो हमें भविष्य में किसी भी प्रकार की प्रौद्योगिकी नकारात्मकता से उबरने में सहायता करेगा।

महोदय, आपको तथा माननीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री तथा यहां उपस्थित सभी व्यक्तियों का एक बार पुनः स्वागत करते हुए मैं अभी हाल ही में घटित एक ऐतिहासिक विकास को निर्दिष्ट करना चाहता हूं। यह रूस में जन्मे दो वैज्ञानिकों, जो अब ब्रिटेन में रह रहे हैं, को मिले भौतिकी के नोबेल पुरस्कार से सम्बन्धित है। उन्होंने जो कार्य किया, वह विज्ञान के लिए सम्मान का विषय है, परन्तु किस आयु में? डॉ. आन्द्रे गेइम 42 वर्ष के हैं और डॉ. कॉन्स्टेन्टिन नोवोसेलोव 36 वर्ष के हैं बेहद आश्चर्यजनक है।

यही वह कार्य है जिसका सृजन हमें भारत में भी करना है। केन्द्रित तथा अभिप्रेरित अनुसंधानकर्ताओं की युवा पीढ़ी ही हमारी आशा है। आइए, उन्हें एक अनुकूल वातावरण प्रदान करें एक बार पुनः आप सभी का स्वागत तथा धन्यवाद।

भटनागर पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर तत्कालीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एवं भूविज्ञान राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री पृथ्वीराज चव्हाण का अभिभाषण

माननीय प्रधानमंत्री जी और अध्यक्ष सीएसआईआर सोसाइटी डॉ. मनमोहन सिंह जी, महानिदेशक, सीएसआईआर डॉ. समीर के. ब्रह्मचारी, पुरस्कार विजेता एवं उनके परिवार के सदस्य भारत सरकार के सचिव तथा अधिकारीगण, अकादमियों और अन्य संस्थानों से आए अतिथि, मेरे सीएसआईआर परिवार के सदस्य, महिलाएं एवं सज्जनों!

मैं इस पुरस्कार वितरण समारोह में आप सबका हार्दिक स्वागत करता हूं जो वर्ष 2009 और 2010 के भटनागर पुरस्कार और ग्रामीण विकास के लिए एस एंड टी नवोन्मेष के लिए सीएसआईआर पुरस्कार के विजेताओं को मान्यता और सम्मान देने के लिए आयोजित किया गया है।

भटनागर पुरस्कार सर्वश्रेष्ठों में सर्वश्रेष्ठ का प्रतिनिधित्व करता है। ये न केवल सबसे प्रतिभावान का सम्मान करते हैं बल्कि भारत के महान सुपुत्र सर शान्तिस्वरुप भटनागर, जिन्होंने सीएसआईआर की नींव रखी या कह सकते हैं कि आधुनिक भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी का आधार रखा, की परम्परा है। भारत के अधिकांश विज्ञान विभाग और संस्थान सीएसआईआर की ही देन हैं।

महोदय, आज का समारोह अत्यन्त विशिष्ट है। भटनागर पुरस्कारों के इतिहास में कभी भी इतनी महिला वैज्ञानिकों को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित नहीं किया गया। वर्ष 2009 के लिए यह पुरस्कार एक महिला को और वर्ष 2010 के लिए तीन महिलाओं को सम्मानित किया गया है। 1956 में इसके आरम्भ से लेकर अब तक कुल 14 महिला वैज्ञानिकों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। हम आशा करते हैं कि यह हमारी महिला वैज्ञानिकों के सशक्तिकरण और पहचान का शुभारम्भ है। यह हमारी महिला खिलाड़ियों द्वारा राष्ट्रमंडल खेलों में किए गए विस्मयकारी प्रदर्शन का पूरी तरह सम्पूरक है। मैं सभी विजेताओं की उनके द्वारा किए गए सबसे सृजनात्मक काम के लिए सराहना करता हूं।

हमें आज वर्ष 2009 के लिए फरीदाबाद स्थित इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के आर एंड डी केन्द्र को कृष्य फसलों के लिए पर्यावरण मित्र, अविषालु, जैवअपक्षीणक **एग्रोस्प्रे तेल** विकसित करने के लिए ग्रामीण विकास के लिए एस एंड टी नवोन्मेष के लिए सीएसआईआर पुरस्कार से सम्मानित करते हुए प्रसन्नता हो रही है। मुझे यह कहते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि यह तेल कृष्य फसलों के नाशककीटों और कुछ बीमारियों के नियंत्रण में हमारे किसानों और कृषि पारिस्थितिकी के लिए बहुत सहायक होगा। यह वास्तव में भारत की सबसे बड़ी सार्वजनिक क्षेत्रक कम्पनी द्वारा किए गए उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य को बिल्कुल सही मान्यता है।

आज हम वर्ष 2009 और 2010 के लिए वैज्ञानिकों को भटनागर पुरस्कार से सम्मानित कर रहे हैं। महोदय, ये वार्षिक पुरस्कार विज्ञान के सात विभिन्न क्षेत्रों यथा रसायन, जीवविज्ञान, इंजीनियरिंग,

श्री पृथ्वीराज चव्हाण, तत्कालीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एवं भूविज्ञान राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अभिभाषण देते हुए

भौतिक विज्ञान, गणितीय विज्ञान, चिकित्सा और भूविज्ञान में दिए जाते हैं। आज पुरस्कार प्राप्त कर रहे 20 वैज्ञानिकों सहित अब तक 463 वैज्ञानिकों को यह सम्मान मिल चुका है। चयन की प्रक्रिया अत्यन्त कठोर, आनुभविक रूप से परिष्कृत होने के कारण एक निष्पादन प्रतिबंध निर्धारित करती है जो ऊंचा है और समय के साथ जिसने विवेकी वैज्ञानिक समुदाय से सम्मान अर्जित किया है। यही कारण है कि वर्ष 2010 के लिए हमने भूविज्ञान और गणितीय विज्ञान में पुरस्कार के लिये किसी को भी नहीं चुना है। मापदंड बनाए रखने के लिए मैं महानिदेशक/सीएसआईआर की प्रशंसा करता हूं।

महोदय, इसी प्रवृत्ति में मैं अत्यन्त सृजनशील और नवोन्मेषी युवा वैज्ञानिकों का सम्मान करने की परम्परा को जारी रखने के लिए सीएसआईआर की प्रशंसा

करता हूं। उनको सम्मानित करके, वास्तव में, ये अपनी उपलब्धियों का उत्सव मनाते हैं। यह अपने योगदानों के विशुद्ध प्रकार और गहराई से लगातार भारत का नेतृत्व कर रहा है। इस संदर्भ में मैं बताना चाहूंगा कि सीएसआईआर के लगभग 100 औद्योगिक भागीदार इस वर्ष नवम्बर में **इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेयर 2010** के एक भाग के रूप में आयोजित **सीएसआईआर टेक्नोफेस्ट** में सीएसआईआर के ज्ञानाधार पर आधारित उत्पादों और सेवाओं को प्रदर्शित करेंगे। वास्तव में यह साठ वर्षों में राष्ट्र के लिए की गई सीएसआईआर की सेवाओं का गौरवपूर्ण सम्मान है।

ज्ञान क्षेत्र में सीएसआईआर द्वारा **एकेडमी ऑफ साइंटिफिक एंड इनोवेटिव रिसर्च** की स्थापना एक क्वांटम छलांग है। महोदय, यह अकादमी न केवल अत्यन्त विचारपूर्ण, नवीनता प्रेरित और औद्योगिक रूप से उपयुक्त पाठचर्या प्रदान करेगी बल्कि योग्य संकाय सदस्य भी होंगे जो सीएसआईआर प्रणाली के अनुभवी वैज्ञानिक होंगे। इसे हमारे लिए संभव बनाने के लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूं, महोदय। हम पहले ही अकादमी की औपचारिक शुरूआत कर चुके हैं।

महोदय, यह कहते हुए मुझे प्रसन्नता और गर्व हो रहा है कि हमारी सरकार के सत्ता में आने के बाद से, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवोन्मेष प्रेरित योजनाओं को बढ़ावा दिया है। प्राथमिक रूप से अपने देश को अपने स्थानांतरीय प्रयासों से प्रयोगशाला जनित जानकारी से औद्योगिक प्रक्रियाओं तक एक शीर्षस्थ प्रारम्भ देने के लिए हमने अनेक नए संस्थान और समूह स्थापित किए हैं। मोहाली में नेशनल एग्री-फूड बायोटैक्नोलॉजी (एनएबीआई), फरीदाबाद में स्थानांतरीय स्वास्थ्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (टीएचएसटीआई), कल्याणी में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बायोमेडिकल जीनोमिक्स, मोहाली में ही नैनोसाइंस एंड टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट की स्थापना कुछ ऐसी पहल हैं जिनका उद्देश्य आने वाले कल के लिए विशेषज्ञ मानव शक्ति तैयार करना है। ये अद्वितीय उद्यम है जो प्रतिभाशालियों को पहचान देते हैं और अन्तरराष्ट्रीय स्तर का पारिश्रमिक और सुविधाएं प्रदान करते हैं। मुझे यह कहते हुए गर्व होता है कि हमारा मंत्रालय अकादमियों, उद्योग और सरकारी संस्थानों के विद्यार्थियों और अनुसंधानकर्ताओं की देखभाल करता है। हमारे लिए वे प्रगति के अंतर्ग्रथित ट्रिपल हेलिक्स का प्रतिनिधित्व करते हैं।

महोदय, जब देश के लिए ग्यारहवीं योजना का व्यापक प्रगति एजेंडा बन रहा था, हमने अपने जीडीपी का 2 प्रतिशत आर एंड डी फंड पर खर्च करने का विचार किया, लेकिन हम इसका एक चौथाई ही खर्च करके निजी क्षेत्र में केवल लगभग 0.9 प्रतिशत तक पहुंचने में सक्षम हैं। इस पर गंभीरता से विचार करना जरूरी है। यद्यपि हमने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, जैवप्रौद्योगिकी, अन्तरिक्ष, परमाणु ऊर्जा विभाग के अन्तर्गत कई नए संस्थान और समूह स्थापित किए हैं; इन्स्पायर नेहरू फैलोशिप और पोस्ट ग्रेजुएट रिसर्च प्रोग्राम इन इंजीनियरिंग (पीजीआरपीई) जैसी अनेक मानव शक्ति विकास योजनाएं आरम्भ की हैं; साइंस एंड इंजीनियरिंग रिसर्च बोर्ड (एसईआरबी), वेलकम ट्रस्ट-डीबीटी इंडिया एलांएस एंड प्रोमोशन ऑफ यूनिवर्सिटी रिसर्च एंड साइंटिफिक एक्सीलेंस (पीयूआरएसई) जैसी अनुदान क्रियाविधियां सृजित की है; यद्यपि ग्यारहवीं योजना लक्ष्य अभी दूर है। इस समय हम देश के लिए नयी एस एंड टी पॉलिसी ला रहे हैं। वैश्विक रूप से, विज्ञान और प्रौद्योगिकी अब एक बड़े डोमेन में चल रही है जहां जीवविज्ञान, रसायन विज्ञान, ऊर्जा, आईटी, नैनोटेक्नोलॉजी पदार्थ आदि के बीच की सीमा रेखा गडमड होकर एक बहुशाखीय अभिसरण में बदल रही है। यह वास्तव में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र के लिए हमारी बारहवीं योजना के ब्लू प्रिंट को आरम्भ करने का समय होना चाहिए। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में निवेश अपने भविष्य के लिए निवेश है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि सीएसआईआर शीघ्र ही पॉलिसी डॉक्यूमेंट सीएसआईआर विजन 2022 को इस आवश्यकता की पूर्ति करने वाला है।

मैं एक बार फिर आप सबका स्वागत करता हूं, मैं माननीय प्रधानमंत्री जी के भटनागर पुरस्कार 2008 के अवसर पर दिए गए अभिभाषण से निम्न पक्तियां उद्धृत करने के लिए लालायित हो रहा हूं जिनमें उन्होंने उस समय के पुरस्कार विजेताओं को यह कहकर प्रोत्साहित किया था।

इन उपलब्धियों की सराहना करने के साथ-साथ हमें बड़ी चुनौतियों का सामना भी करना है। विज्ञान, उद्योग तथा सरकार कैसे एक प्रभावशाली तथा एकीकृत मशीन के रूप में अपनी वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों का लाभ आम लोगों तक पहुंचा सकते हैं।

यह संदेश आज के पुरस्कार विजेताओं के लिए और हमारे लिए भी समान रूप से सत्य है।

हमें उनकी और राष्ट्र की आशाओं पर खरा उतरना है। धन्यवाद!

शान्ति स्वरुप भटनागर पुरस्कार वितरण समारोह में प्रधानमंत्री का अभिभाषण

आज हमारे देश के प्रतिभाशाली युवा वैज्ञानिकों को सम्मानित करने के लिए आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में आकर मुझे अति प्रसन्नता हुई है। मैं वर्ष 2009 तथा 2010 के लिए प्रतिष्ठित शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार के विजेताओं को बधाई देता हूं। ये पुरस्कार न केवल इन वैज्ञानिक विशेष के प्रति सम्मान है बल्कि उन संस्थानों के लिए भी सम्मान का विषय है जिन्होंने उनकी विलक्षण प्रतिभा को पोषित करने के लिए उचित वातावरण का सृजन किया।

शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार उन वैज्ञानिकों को प्रदान किया जाता है जो कि 45 वर्ष से कम आयु के हैं। ये पुरस्कार न केवल वैज्ञानिकों द्वारा पहले किये गये उत्कृष्ट कार्यों को मान्यता देते हैं अपितु आने वाले वर्षों में और अधिक महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त करने का वचन भी देते हैं। अतः पुरस्कार विजेताओं से मैं कहना चाहता हूं- **हमारा राष्ट्र आपकी उपलब्धियों से गौरवान्वित है बल्कि आने वाले वर्षों में आपसे और भी अधिक उपलब्धियां प्राप्त करने की आशा रखता है।** कल हैदराबाद में मैंने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च के नए परिसर के शुभारम्भ के अवसर पर कहा कि हम पुराने कार्यों पर ही निर्भर नहीं रह सकते। यदि हम वैज्ञानिक विश्व की ऊंचाईयों को छूने की इच्छा रखते हैं; यदि हम 9-10% वार्षिक की दर से उच्च विकास दर बनाना चाहते हैं और यदि हम गरीबी, अज्ञानता, रोग तथा भूख को विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में अन्वेषण तथा सृजनात्मकता के द्वारा हटाना चाहते हैं तो हमें हमारी पद्धतियों तथा विधियों को आधारभूत ढंग से ही बदलना होगा।

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का स्वागत करते हुए तत्कालीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा भूविज्ञान राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और उपाध्यक्ष, सीएसआईआर, श्री पृथ्वीराज चव्हाण

मेरा यह मानना है कि हमें भूतकाल से नाता तोड़ने की आवश्यकता है। हमें नवीन प्रणालियां नवीन संरचनाएं तथा कार्यों को करने के नये ढंग की आवश्यकता है जो न केवल व्यक्ति विशेष की उत्कृष्टता को उत्साहित करेगी बल्कि सामाजिक रूप से उत्पादक गुणात्मक निर्गत को प्रभावशाली ढंग से बढ़ा पाएगी।

यह हमारी सरकार के सम्मुख एक प्रमुख चुनौती है बल्कि विशेष रूप से हमारे वैज्ञानिक समुदाय के सम्मुख। हमें इस विषय पर विस्तार से सोचने की आवश्यकता है कि हम कौन-सा नवीन पथ अपनाएं। यदि वैज्ञानिक समुदाय के नेता इस बात पर सहमति बना लें कि क्या करने की आवश्यकता है तथा इस खेल के नये नियम क्या होने चाहिए, यह सरकार के लिए कार्य करने हेतु एक शक्तिशाली प्रेरणा होगी।

यह वह समय है जब भारतीय वैज्ञानिकों की नयी पीढ़ी को भारतीय विज्ञान के भविष्य के विषय में सोचने का उत्तरदायित्व लेना होगा तथा नेतृत्व का बीड़ा स्वयं अपने कंधों पर उठाना होगा।

भारत सरकार ने वर्तमान दशक को **अन्वेषण दशक** घोषित किया है। हमारी सरकार ने एक राष्ट्रीय अन्वेषण परिषद की स्थापना भविष्य के मार्गदर्शन में सहायता के लिए की है। परिषद अन्वेषण के एक भारतीय मॉडल का विकास करेगी जो औपचारिक अनुसंधान तथा विकास आधारित प्रणालियों से भी उच्चतम होगा। यह एक उपयुक्त पारिस्थितिकी के सृजन पर केन्द्रित होगा जो हमारी आर्थिकी के विविध सेक्टरों में अन्वेषण को बढ़ाने में संचालक होगा। यह सक्षम प्रौद्योगिकियों का प्रयोग न केवल नवीन उत्पादों, नवीन प्रक्रियाओं तथा नवीन सेवाओं के विकास के लिए करेगा अपितु विद्यमान उत्पादन तथा डिलीवरी प्रणालियों को भी संशोधित करेगा।

डॉ. मनमोहन सिंह, प्रधानमंत्री, एसएसबी पुरस्कार वितरण समारोह में अभिभाषण देते हुए

परिषद उन नीति परिवर्तनों की पहचान करेगी जो कि अन्वेषण के कारणों को बढ़ाने तथा प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक हैं। हालांकि अन्वेषण के लिए अपनी आर्थिकी के सभी महत्वपूर्ण सेक्टरों को प्रोत्साहित करते समय यह सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम औद्योगिक सेक्टरों में अन्वेषण की सुविधा देने के लिए तथा जन सेवाओं को प्रदान करने के लिए विशेष प्रयास करेगा।

कार्यक्रम के अन्त में आईजीआईबी के निदेशक डॉ. राजेश गोखले ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार वितरण समारोह

वर्ष 1957 में स्थापित शान्ति स्वरुप भटनागर पुरस्कार भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी पुरस्कार है। इन पुरस्कारों में ₹ 5 लाख का नकद पुरस्कार, एक प्रशस्तिपत्र तथा पट्टिका (1) जीवविज्ञान (2) रसायन (3) भू, वायुमंडल, महासागर तथा भूमण्डलीय (4) इंजीनियरिंग (5) गणितीय (6) चिकित्सा तथा (7) भौतिक विज्ञान के क्षेत्रों में अनुसंधान में कार्यरत जाने माने उत्कृष्ट अनुसंधान, अनुप्रयुक्त अथवा आधारभूत - कार्यों के लिए वार्षिक रूप से दी जाती है। भारत का कोई भी व्यक्ति जो विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान कार्यों में रत है तथा पुरस्कार वर्ष से पूर्व के 31 दिसम्बर को 45 वर्ष से अधिक आयु का नहीं है, इसके लिए पात्र होता है।

सीएसआईआर के मतानुसार किसी भी पात्र वैज्ञानिक द्वारा मानव ज्ञान तथा प्रगति - आधारभूत अथवा अनुप्रयुक्त - किसी विषय विशेष क्षेत्र जो उनका विशिष्ट क्षेत्र हो, में महत्वपूर्ण तथा उत्कृष्ट योगदान दिया गया हो। पुरस्कार का वितरण पिछले पांच वर्षों के दौरान मुख्य रूप से भारत में उनके कार्यों के द्वारा योगदान के आधार पर किया जाता है।

वर्ष 2009 के शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार के लिये 11 वैज्ञानिकों को तथा वर्ष 2010 के लिए 9 वैज्ञानिकों को पुरस्कार प्रदान किये गये।

वर्ष 2009 के शान्तिस्वरूप भटनागर पुरस्कार विजेता

जीवविज्ञान

डॉ. अमिताभ जोशी

वर्ष 2009 के लिए जीवविज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार डॉ. अमिताभ जोशी, जवाहर लाल नेहरू सेन्टर फॉर एडवांस्ड साइंटिफक रिसर्च, बेंगलुरु को प्रदान किया गया। डॉ. जोशी ने प्रयोगात्मक विकास तथा जनसंख्या गतिकी के अध्ययन में उत्कृष्ट योगदान दिया है। उनके कार्य ने प्रयोगशाला परिस्थितियों के अन्तर्गत प्राकृतिक चयन की क्रिया का सृजनात्मक रूप से पता लगाया है।

डॉ. भास्कर साहा

वर्ष 2009 के लिए जीव विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार नेशनल सेंटर फॉर सैल साइंस, पुणे के डॉ. भास्कर साहा को प्रदान किया गया। डॉ. साहा ने प्रतिरक्षी विज्ञान तथा कोशिका संकेतकों के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दिया है। उनके अध्ययन ने प्रतिरक्षी कोशिकाओं में संकेत ट्रांसडक्शन मैकेनिज्म की प्लास्टिसिटी में महत्वपूर्ण अन्तर्दृष्टि प्रदान. की है तथा यह जानकारी भी दी है कि चिकित्सीय उद्देश्यों के लिए इन्हें कैसे प्रयोग किया जा सकता है।

रसायन विज्ञान

डॉ. चारुसिता चक्रवर्ती

वर्ष 2009 के लिए रसायन विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली की डॉ. चारुसिता चक्रवर्ती को रासायनिक प्रणाली में क्वान्टम प्रभाव का अध्ययन करने के लिए पाथ इन्टीग्रल विधियों के विकास तथा द्रव्यों के भौतरासायनिक गुणों के अध्ययन के लिए क्लासिकल तथा क्वान्टम साइमुलेशन के अनुप्रयोग में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रदान किया गया।

डॉ. नारायणस्वामी जयरामन

वर्ष 2009 के लिए रसायन विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु के डॉ. नारायणस्वामी जयरामन को जटिल कार्बोहाइड्रेट के संश्लेषण तथा नवीन डेन्ड्रीटिक सिस्टम के विकास में उनके ध्यानाकर्षण योगदान के लिए प्रदान किया गया।

वर्ष 2009 के लिए शान्तिस्वरूप भटनागर पुरस्कार विजेता

भू, वायुमंडल, महासागर तथा भूमण्डलीय विज्ञान

डॉ. एस.के. सथीश

वर्ष 2009 के लिए भू, वायुमंडल महासागर तथा भूमण्डलीय विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार सेंटर फॉर एटमॉस्फियरिक एण्ड ओशियेनिक साइन्सेस, इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ साइन्स, बेंगलुरु के डॉ. एस.के. सथीश को वातावरणीय एयरोसोल के अध्ययन और जलवायु पर भविष्य में उसके प्रभाव के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया।

इंजीनियरिंग विज्ञान

डॉ. गिरिधर मद्रास

वर्ष 2009 के लिए इंजीनियरिंग विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु के डॉ. गिरिधर मद्रास को प्रदान किया गया। डॉ. गिरिधर ने बहुलकों के अपघटन के नूतन साधनों को समझने तथा उनके विकास में महत्वपूर्ण तथा आधारभूत योगदान दिया है।

डॉ. जयन्त रामास्वामी हरित्सा

वर्ष 2009 के लिए इंजीनियरिंग विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु के डॉ. जयन्त रामास्वामी हरित्सा को डेटाबेस इंजन के सिद्धान्त, अभिकल्पन तथा विश्लेषण जो कि ट्रांसेक्शन-प्रोसेसिंग तथा डिसीजन सपोर्ट एन्वायरन्मैंट दोनों में होता है, में उत्कृष्ट सहयोग के लिए प्रदान किया गया है।

गणितीय विज्ञान

डॉ. वेनापल्ली सुरेश

वर्ष 2009 के लिए गणितीय विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार हैदराबाद विश्वविद्यालय,हैदराबाद के डॉ. वेनापल्ली सुरेश को प्रदान किया गया है। डॉ. सुरेश ने क्वाड्रेटिक रूपों की एलजेब्रिक थ्योरी तथा डिवीजन एलजेबरा के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

चिकित्सा विज्ञान

डॉ.सन्तोष गजानन होनावर

वर्ष 2009 के लिए चिकित्सा विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार एल वी प्रसाद आई इंस्टीट्यूट, हैदराबाद के डॉ. सन्तोष गजानन होनावर को प्रदान किया गया। डॉ. होनावर को असाधारण रूप से रोगी की उत्तरजीविता, नेत्र सुरक्षा तथा दृष्टि पुनर्प्राप्ति के साथ उन्नत रेटिनोब्लास्टोमा के प्रबन्धन में महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रदान किया गया। उनकी हाई-डोज कीमोथैरेपी तथा उन्नत इन्ट्राऑक्यूलर रेटिनोब्लास्टोमा के लिए पेरीऑक्यूलर कीमोथैरेपी, हाईरिस्क वाले रोगियों में मेटास्टेसिस के जोखिम को कम करने की एडजुवेन्ट थिरेपी तथा ऑरबिटल रेटिनोब्लास्टोमा के मल्टी मॉडल मैनेजमैंट को विश्वभर में सराहा गया है।

भौतिक विज्ञान

डॉ. राजेश गोपाकुमार

वर्ष 2009 के लिए भौतिक विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार हरीशचन्द्र रिसर्च इंस्टीट्यूट, इलाहाबाद के डॉ. राजेश गोपाकुमार को स्ट्रिंग थ्योरी, क्वान्टम फील्ड थ्योरी तथा गणित को समझने में उनके आधारभूत योगदान के लिए प्रदान किया गया। उनका कार्य गॉज थ्योरी तथा गुरुत्वाकर्षण के मध्य सम्बन्ध में नवीन तथा गहन अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है।

डॉ. अभिषेक धर

वर्ष 2009 के लिए भौतिक विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट, बेंगलुरु के डॉ. अभिषेक धर को न्यून आयामीय प्रजातियों में क्लासिक तथा क्वान्टम परिवहन में अन्तर्दृष्टि से भरपूर तथा कठिन परिणामों तथा नॉन इक्वीलिब्रियम फ्लक्च्युयेशन थ्योरम में महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रदान किया गया।

वर्ष 2010 के शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार

जीव विज्ञान

डॉ. संजीव गलांडे

वर्ष 2010 के लिए जीव विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार राष्ट्रीय कोशिका विज्ञान केन्द्र, पुणे के डॉ. संजीव गलांडे को जीन एक्स्प्रेशन में स्पेटियोटेम्पोरल परिवर्तन लाने वाले उच्च स्तर के क्रोमेटिन आर्किटैक्चर में गत्यात्मक् परिवर्तन कैसे होता है, को समझने में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रदान किया गया। उनके कार्य ने विशेष रूप से टी सेल विकास तथा विभेदन में Wnt सिग्नल की भूमिका पर महत्वपूर्ण अन्तर्दृष्टि प्रदान की है।

डॉ. शुभा तोले

वर्ष 2010 के लिए जीवविज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान, मुम्बई की डॉ. शुभा तोले को सीखने की प्रक्रिया तथा स्मरण शक्ति को नियंत्रित करने वाले हिप्पोकैम्पस के निर्माण को नियंत्रित करने वाली क्रियाविधियों की पहचान करने में मस्तिष्क विकास की हमारी समझ में आधारभूत योगदान के लिए प्रदान किया गया।

रसायन विज्ञान

डॉ. स्वपन के पति

वर्ष 2010 के लिए रसायन विज्ञान का

शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार जवाहरलाल नेहरू सेंटर फॉर एडवांस्ड साइंटिफिक रिसर्च, बेंगलुरु के डॉ. स्वप्न के पति को मॉलीक्युलर सिस्टम में नवीन इलेक्ट्रॉनिक, आप्टिकल तथा चुम्बकीय घटना को समझने में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रदान किया गया।

डॉ. संदीप वर्मा

वर्ष 2010 के लिए रसायन विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के डॉ. संदीप वर्मा को धातु व्यवहित पद्धतियों तथा व्यवस्थित पेप्टाइड संयोजनों के अध्ययन द्वारा एंजाइमों में महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रदान किया गया।

इंजीनियरिंग साइंस

डॉ. जी के अनंतसुरेश

वर्ष 2010 के लिए इंजीनियरिंग विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु के डॉ. जी.के. अनन्तसुरेश को अनुवर्ती माइक्रोमैकिनिज्म के उभरते क्षेत्र में नवीन सिद्धान्तों तथा अभिकल्पन पद्धतियों का विकास करने में उत्कृष्ट योगदान तथा जैव-अभिकल्पन में नवाचारी अन्तर्शाखीय योगदान के लिए प्रदान किया गया।

डॉ. संघमित्रा बंधोपाध्याय

वर्ष 2010 के लिए इंजीनियरिंग विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार भारतीय सांख्यिकी संस्थान, कोलकाता के डॉ. संघमित्रा बंधोपाध्याय को इवोल्युशनरी कम्प्यूटेशन, पैटर्न रिकोग्नीशन तथा बायोइन्फॉर्मेटिक्स में सिद्धान्त तथा एल्गोरिद्म में अनूठे योगदान के लिए प्रदान किया गया। miRNAs पर उनके कम्प्यूटेशन अध्ययन तथा कैंसर में इनकी संलग्नता ने इन जैव अणुओं की कार्यप्रणाली पर गहन अन्तर्दृष्टि प्रदान की है जो कि उपचार के नवीन रास्तों का विकास करने के लिए आवश्यक हैं।

चिकित्सा विज्ञान

डॉ. मिताली मुखर्जी

वर्ष 2010 के लिए चिकित्सा विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार जीनोमिकी एवं समाकलित जीवविज्ञान संस्थान (सीएसआईआर), दिल्ली की डॉ. मिताली मुखर्जी को जीनोमिकी विशेषकर कुछ महत्वपूर्ण न्यूरो विसंगतियों के जीनोमिक पुनर्निर्माण को स्पष्ट करने के लिए उनके उत्कृष्ट योगदान हेतु प्रदान किया गया। उन्होंने रोग संबंधित अध्ययनों पर भविष्य में पड़ने वाले गहरे प्रभाव सहित भारत के लोगों की जीनोमिक विविधता में महत्वपूर्ण अन्तर्दृष्टि तथा नेतृत्व आयुर्वेद और जीनोमिक्स के समाकलन में पहल की।

भौतिक विज्ञान

डॉ. उमेश वासुदेव वाघमारे

वर्ष 2010 के लिए भौतिक विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार जवाहरलाल नेहरू सेंटर फॉर एडवांस्ड साइंटिफिक रिसर्च, बेंगलुरु के डॉ. उमेश वासुदेव वाघमारे को एब-इनीशियो विधियों का विकास करने तथा वृहद तथा नैनो माप के सामग्री के मुख्य गुणों का समझने में सॉफ्ट मोड्स, चुम्बकीयता, विसंगतियां तथा रासायनिक त्रुटियों को पकड़ने वाले माइक्रोस्कोपिक मॉडलों का प्रयोग करने में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया।

डॉ. कालोबरण माइति

वर्ष 2010 के लिए जीव विज्ञान का शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान, मुम्बई के डॉ. कालोबरण माइति को मेटल-इन्सुलेटर ट्रांसजिशन, चार्ज डेन्सिटी वेब तथा कोन्डो सिस्टम की भौतिकी को समझने में बहुत उच्च विभेदन के फोटो इलेक्ट्रॉन स्पेक्ट्रोस्कॉपी के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया।

वर्ष 2010 में भू, वायुमंडल, महासागर तथा भूमंडलीय विज्ञान और गणितीय विज्ञान के क्षेत्र में कोई पुरस्कार नहीं दिए गए।

वर्ष 2010 के लिए शान्तिस्वरुप भटनागर पुरस्कार विजेता

निस्केयर में हिन्दी मास का आयोजन
(14 सितम्बर 2010 से 14 अक्टूबर 2010)

इस वर्ष संस्थान में पहली बार मास का आयोजन किया गया। दिनांक 14 सितम्बर को आरम्भ हुए, इस हिन्दी मास में मास पर्यन्त राजभाषा हिन्दी से सम्बन्धित गतिविधियों का बोलबाला रहा। इस वर्ष भी हिन्दी मास का आरम्भ एक अपील से हुआ। जिसमें संस्थान की राजभाषा इकाई प्रमुख श्रीमती दीक्षा बिष्ट, वैज्ञानिक-जी ने संस्थान के सभी कार्मिकों से इस अवधि के दौरान अपना अधिकाधिक कार्यालयी कार्य राजभाषा हिन्दी में करने का अनुरोध किया। माह के दौरान छह प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया - निबन्ध प्रतियोगिता, नोटिंग-ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, कविता-पाठ प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, अन्ताक्षरी प्रतियोगिता।

निस्केयर में हिन्दी मास समारोह के दौरान मंच का एक दृश्य

इस वर्ष वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए जिस विषय को चुना गया, वह विषय था - बेहतर भविष्य निर्माण के लिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली श्रेष्ठ है.......। बहुत से प्रतिभागियों ने इस विषय के पक्ष और विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किये। दूसरी प्रतियोगिता निबन्ध लेखन के लिए प्रतिभागियों को निम्न दो विषयों में से किसी एक पर अपने विचार कम से कम तीन सौ शब्दों में प्रकट करने के लिए कहा गया था।

1. वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ग्रेडिंग सिस्टम क्या भविष्य के लिए उपयोगी सिद्ध होगा? अथवा
2. प्राकृतिक आपदाएं क्या ग्लोबल वार्मिंग का परिणाम है?

तीसरी प्रतियोगिता हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता के अन्तर्गत कुछ प्रतिभागियों ने स्वरचित कविताओं का भी पाठ किया। चौथी प्रतियोगिता नोटिंग/ड्राफ्टिंग पर आधारित थी, जिसमें प्रशासनिक कर्मचारियों/अधिकारियों के साथ-साथ वैज्ञानिक तथा तकनीकी कर्मचारियों/अधिकारियों ने भी भाग लिया। अन्य दो प्रतियोगिताएं टीम इवेन्ट के रूप में अन्ताक्षरी तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं थी। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन संस्थान में पहली बार किया गया था। इस प्रतियोगिता को सभी के द्वारा बहुत सराहा गया। अतः राजभाषा इकाई ने निर्णय लिया है कि भविष्य में भी प्रतिवर्ष प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन अवश्य किया जाएगा।

हिन्दी मास के दौरान आयोजनों की कड़ी के रूप में हिन्दी मास समारोह का आयोजन 11 अक्टूबर 2010 को किया गया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध हास्य कवि श्री यूसुफ भारद्वाज को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

इस समारोह का शुभारम्भ मुख्य अतिथि, निदेशक महोदय तथा मंच पर उपस्थित अन्य अधिकारीगणों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात श्रीमती दीक्षा बिष्ट, प्रमुख, राजभाषा इकाई ने संस्थान की राजभाषा इकाई की गतवर्ष की गतिविधियों की एक संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में राजभाषा इकाई द्वारा प्राप्त की गयी उपलब्धियों के विषय में उपस्थित जनसमूह को बताया कि संस्थान राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय द्वारा जारी किये गये वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों में से बहुत से लक्ष्यों को शतप्रतिशत प्राप्त कर चुका है तथा अन्य लक्ष्यों को पूर्ण करने के प्रयास में रत है। संस्थान की वेबसाइट द्विभाषी है जोकि अपने आपमें एक बड़ी उपलब्धि है। साथ ही उन्होंने संस्थान के कार्मिकों का, जिन्होंने आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया, के साथ-साथ विजेता कार्मिकों को भी बधाई दी तथा अन्य लोगों को भी इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया।

श्रीमती बिष्ट ने इन प्रतियोगिताओं के लिए गठित निर्णायक मंडल के सभी सदस्यों

का आभार प्रकट किया। हिन्दी दिवस के अवसर पर प्रकाशित की गयी वार्षिक राजभाषा पत्रिका **संचेतना** के समय पर प्रकाशन के लिए प्रिन्ट प्रोडक्शन यूनिट का आभार व्यक्त किया। उन्होंने संचेतना में प्रकाशन के लिए अपने लेख देने के लिए संस्थान के कार्मिकों का भी धन्यवाद दिया।

अन्त में उन्होंने संस्थान के सभी कार्मिकों से अपना सहयोग इसी प्रकार बनाए रखने के अनुरोध के साथ सभी का एक बार पुनः धन्यवाद किया। इसके पश्चात संस्थान के निदेशक डॉ. गंगन प्रताप ने अपने संक्षिप्त अभिभाषण में उपस्थित जनसमूह को हिन्दी की विशेषताएं बताते हुए कहा कि महात्मा गांधी ने इस भाषा का प्रयोग देश को एकजुट करने के लिए किया। उन्होंने बताया कि विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में इसका स्थान दूसरा है तथा इसे **लिंक लैंग्वेज** भी कहते हैं क्योंकि इसने दक्षिण तथा पश्चिम के मध्य दूरियों को कम किया है।

संस्थान में राजभाषा हिन्दी कार्यान्वयन की गतिविधियों तथा उनसे प्राप्त परिणामों से अपनी सन्तुष्टि प्रदर्शित करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे संस्थान ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम में दिये लक्ष्यों में से अधिकतर को प्राप्त कर लिया है तथा इसी प्रकार यदि भविष्य में भी सभी कार्मिक इसी प्रकार अपना योगदान देते रहे तो हम अन्य लक्ष्यों को भी प्राप्त कर पाएंगे। उन्होंने सभी उपस्थित लोगों से हिन्दी के महत्व को समझ उसे अपनाने के लिए कहा।

श्रीमती मीनाक्षी गौड़, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक ने मुख्य अतिथि का परिचय देते हुए बताया कि आज हिन्दी मास समारोह के सुअवसर पर आमंत्रित कवि श्री यूसुफ भारद्वाज यूं तो स्वयं प्रौढ़ावस्था में प्रवेश कर

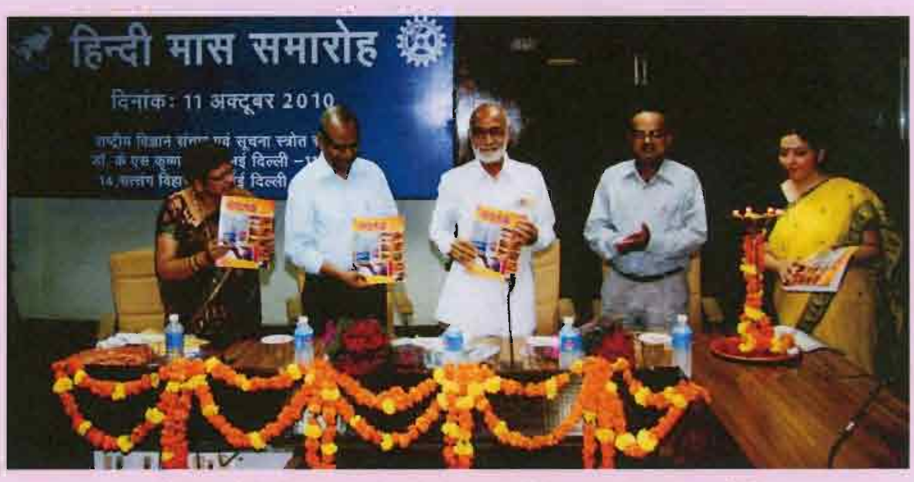

निस्केयर में हिन्दी मास समारोह में संचेतना का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि

चुके हैं परन्तु उनकी रचनाएं अभी युवावस्था में ही हैं क्योंकि उन्होंने हास्य व्यंग्य के इस क्षेत्र में कदम पचास वर्ष की आयु के पश्चात रखा। श्री यूसुफ भारद्वाज को इतने कम समय में भी **कलाश्री** तथा **राष्ट्रभाषा गौरव** जैसे राष्ट्रीय स्तर के सम्मान प्राप्त हो चुके हैं तथा उन्होंने देश-विदेश में अपने हरियाणवी लहजे में हास्य व्यंग्य के द्वारा काफी नाम कमाया। श्री युसूफ भारद्वाज ने संस्थान की वार्षिक राजभाषा पत्रिका **संचेतना** के बारहवें खण्ड का विमोचन भी किया। श्री यूसुफ भारद्वाज ने अपना कविता पाठ आरम्भ करने से पूर्व आमंत्रित जनसमूह को कार्यालयी कार्यों में राजभाषा का प्रयोग करने के लिए आग्रह किया। तत्पश्चात उन्होंने अपने हास्य व्यंग्य से सराबोर कविता पाठ के द्वारा दर्शकों को खूब हंसाया।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री योगेश कुमार शर्मा, प्रशासन नियंत्रक ने उपस्थित जनसमूह को बताया कि इस बार निस्केयर में आयोजित हिन्दी मास उनके लिए विशेष अनुभव लेकर आया है। उन्होंने प्रशासन में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की स्थिति पर सन्तोष जाहिर करते हुए कहा कि अभी प्रशासन में इसकी प्रगति की और भी सम्भावनाएं हैं। इसके साथ ही उन्होंने सभी को अपना कार्यालयी कार्य हिन्दी में करने का अनुरोध किया।

इसके पश्चात मुख्य अतिथि तथा निदेशक महोदय द्वारा हिन्दी मास के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार विजेताओं को नकद पुरस्कार के साथ-साथ एक प्रमाण-पत्र भी दिया गया।

अन्त में श्रीमती सिमेश वर्मा, प्रशासनिक अधिकारी ने संस्थान में स्थापना दिवस आयोजन तथा हिन्दी मास आयोजन सम्बन्धी अपने अनुभव बताते हुए कहा कि निस्केयर एक सक्रिय संस्थान है और यहां के कार्मिक सक्रिय रूप से उत्साह के साथ हर आयोजन में भाग लेते हैं।

मुझे भी इन आयोजनों में भाग लेकर बहुत अच्छी अनुभूति हुई तथा मैं चाहती हूं कि इसी प्रकार सभी कार्मिक इन आयोजनों का हिस्सा बनें तथा कार्यालयी कार्यों के अतिरिक्त इन कार्यों में भी सक्रिय योगदान दें। इसके साथ ही उन्होंने उपस्थित सभी कार्मिकों को इतने उत्साह के साथ कार्यक्रम में भाग लेने के लिए धन्यवाद किया। उनके धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

राष्ट्रीय अन्तर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान में हिन्दी दिवस एवं हिन्दी सप्ताह 2010 का आयोजन

संस्थान में दिनांक 14 सितम्बर 2010 को हिन्दी दिवस के रूप में तथा बाद के एक सप्ताह को हिन्दी सप्ताह के रूप में मनाया गया। पूरे सप्ताह के दौरान राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए परियोजना स्टाफ, अनुसंधान छात्र आदि सहित संस्थान के सम्पूर्ण स्टाफ के सदस्यों तथा उनके स्कूली बच्चों के लिए अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। कार्यक्रम का शुभारम्भ सुश्री प्रीती एवं सुश्री अपर्णा के वंदन गीत से हुआ। डॉ. एस.के. नस्कर, निदेशक, केन्द्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान, तिरुवनंतपुरम समारोह में मुख्य अतिथि थे। संस्थान के निदेशक डॉ. सुरेश दास ने समारोह की अध्यक्षता की। हिन्दी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. अशोक पाण्डेय ने मुख्य अतिथि, निदेशक तथा समारोह में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने दीप प्रज्ज्वलित करके समारोह का औपचारिक उद्‌घाटन किया और हिन्दी दिवस व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने भाषण में केन्द्रीय कन्द फसल अनुसंधान संस्थान में हो रहे अनुसंधान कार्य एवं उपलब्धियों का संक्षिप्त परिचय दिया और प्रतिभागियों से यह अपील की कि कार्यालय में केन्द्र सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सभी प्रयास किए जाएं और कार्यालय के अधिकांश कार्य हिन्दी में करके राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा दें। संस्थान के निदेशक डॉ. सुरेश दास ने समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारतीय संविधान में किए गए उपबंधों एवं उनके आधार पर बनाए गए अधिनियम एवं नियमों के अनुरूप हिन्दी का प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार सुनिश्चित करना भारत सरकार के सभी कार्यालयों का दायित्व है। इस दायित्व के आलोक में आमतौर पर भारत सरकार की राजभाषा नीति का समुचित अनुपालन केन्द्रीय सरकार के सभी कार्यालयों में सुनिश्चित किया जाता है।

उन्होंने अपने भाषण में आगे बताया कि संस्कृत और हिन्दी देश के दो भाषा रूपी स्तम्भ हैं, जो देश की संस्कृति, परम्परा और सभ्यता को विश्व के मंच पर बखूबी प्रस्तुत करते हैं। आज विश्व के कोने-कोने से विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिए हमारे देश का रुख कर रहे हैं। हिन्दी भाषा विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा है। अब हमारी हिन्दी भाषा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत पसन्द की जाती है। इसका एक कारण यह है कि हमारी भाषा हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिम्ब है। उन्होंने आगे हिन्दी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिन्दी भाषा भारतीय संस्कृति की धरोहर है जिसे बचाना भारतवासियों का परम कर्तव्य है। ध्यान, योगआसन और आयुर्वेद विषयों के साथ-साथ इनसे संबंधित हिन्दी शब्द आदि ऐसी संस्कृति है, जिसे पाने के लिए हिन्दी के रास्ते से ही पहुंचा जा सकता है। लगभग हर देश में योग, ध्यान और आयुर्वेद के केन्द्र खुल गए हैं, जो दुनिया भर के लोगों को भारतीय संस्कृति की ओर आकर्षित करते हैं, जो स्वयं हमारी हिन्दी भाषा और संस्कृति से प्रभावित हैं। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से हिन्दी दिवस पर हिन्दी भाषा तथा अपनी संस्कृति को बचाने के लिए सभी संभव प्रयास करने का दृढ़ निश्चय करने का आग्रह किया।

समारोह के दौरान मुख्य अतिथि ने संस्थान के रसायन विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रभाग की गतिविधियों पर विशेषांक के रूप में प्रकाशित अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका **आईआईएसटी समाचार** के चौथे अंक की प्रथम प्रति निदेशक को सौंपकर पत्रिका का लोकार्पण किया।

श्री संजय सुमन, सदस्य, आयोजन समिति ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उद्‌घाटन सत्र के बाद सी-डैक, तिरुवनन्तपुरम के सहयोग से कम्प्यूटरों पर हिन्दी के प्रयोग से संबंधित डिमान्स्ट्रेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संचालन के लिए सी-डैक, तिरुवनंतपुरम से उपस्थित वैज्ञानिक श्रीमती शोभना वर्मा ने प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए बताया कि सूचना-प्रौद्योगिकी ने आज हमारे जीवन के समस्त पहलुओं को प्रभावित किया है। भाषाओं के विकास की दिशा में यह वरदान साबित हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्यरत विशेषज्ञों का ध्यान भाषाओं की ओर भी आकृष्ट हुआ है। परिणामतः भाषाओं के विकास में उपयोगी कई उपकरण इनके द्वारा विकसित किए गए हैं। इनके प्रयोग से हम अपने कामकाज में गतिशीलता एवं गुणात्मकता सुनिश्चित कर सकते हैं। राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार के लिए आज कई साधन उपलब्ध हैं। ऐसे साधनों एवं उपकरणों के प्रति जागरूकता के अभाव में इनका प्रयोग एवं सदुपयोग नहीं हो पाता है। इस ओर ध्यान देकर इस संबंध में स्टाफ सदस्यों को आवश्यक दिशा-निर्देश देना यह डिमॉन्स्ट्रेशन कार्यक्रम का उद्देश्य है। भारतवर्ष हिन्दी भाषी राष्ट्र है, उसको हिन्दी के प्रचार व प्रसार पर ध्यान देना चाहिए। इस दिशा में किए गए

प्रयास का परिणाम है - इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार व प्रयोग। उन्होंने कम्प्यूटरों पर हिन्दी के प्रयोग से संबंधित सैद्धांतिक पक्ष पर प्रतिभागियों को समझाया और श्रीमती मुम्तास, संकाय सदस्य, सी-डैक ने कम्प्यूटरों पर यूनिकोड भाषा इन्कोडिंग गूगल की सहायता से अनुवाद, राष्ट्रभाषा विभाग के हिन्दी पोर्टल, यूनिकोड के लिए यूनिवर्सल फ़ॉन्ट की संस्थापना, कम्प्यूटरों पर ध्वन्यात्मक, इंस्क्रीप्ट, टाइपराइटर जैसे विभिन्न प्रकार के कुंजी बोर्डों का उपयोग आदि पर प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया और अभ्यास करवाया।

हिन्दी सप्ताह के दौरान राजभाषा के प्रचार-प्रसार को लक्ष्य करके स्टाफ सदस्यों के बीच हिन्दी में टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता, हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता, हिन्दी प्रश्नोत्तरी तथा हिन्दी पठन तथा सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता स्टाफ सदस्यों के स्कूली बच्चों के लिए हिन्दी निबन्ध लेखन, हिन्दी अनुवाद, हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिताएं तीन ग्रुपों में आयोजित की गईं। सभी प्रतियोगिताओं में स्टाफ सदस्यों तथा स्कूली बच्चों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

निदेशक डॉ. सुरेश दास की अध्यक्षता में दिनांक 20 सितम्बर 2010 को समापन समारोह आयोजित किया गया। डॉ. अशोक पाण्डेय ने समारोह में उपस्थित सभी का स्वागत किया। हिन्दी सप्ताह के सफल आयोजन के लिए स्टाफ सदस्यों तथा उनके स्कूली बच्चों द्वारा दिए गए सौहार्दपूर्ण सहयोग के लिए निदेशक ने सभी को धन्यवाद दिया और और उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र से स

श्रीमती एस. शोभना, अनुभाग अधिकारी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समापन समारोह सम्पन्न हुआ।

नीस्ट, जोरहाट में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन

अन्य वर्षों की भांति इस वर्ष भी उत्तर-पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान, जोरहाट में 14 सितम्बर 2010 को संस्थान के विशाल सभागार में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ हिन्दी दिवस मनाया गया। संस्थान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रचलित करने के उद्देश्य से आयोजित इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्र कुमार, भा.पु.से., थे जो वर्तमान में पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय, डेरगांव, गोलाघाट के प्रिंसिपल हैं।

प्रभारी, निदेशक डॉ. आर सी बरूआ ने समारोह के सभापति के रूप में अपने संक्षिप्त भाषण में कहा कि राजभाषा के रूप में हिन्दी भाषा को कार्यालयों में विकसित करना हमारा संवैधानिक दायित्व है, इसे हम सब मिलकर ही आगे बढ़ा सकते हैं। अपने प्रस्तावना संबोधन में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जे सी एस कटकी ने कहा कि संस्थान में हिन्दी भाषा, टंकण एवं आशुलिपि से जुड़े सभी प्रकार के प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध है। काफी लोग प्रशिक्षित हो चुके हैं। उन्होंने संस्थान में आयोजित हिंदी सप्ताह आयोजन का भी जिक्र किया और अवगत कराया कि संस्थान के एक स्टाफ ने हिन्दी आशुलिपि परीक्षा में पूरे भारत में नौवां स्थान प्राप्त किया। इस प्रकार उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों के साथ-साथ यहां के राजभाषा प्रभारी श्री अजय कुमार के प्रयासों की प्रशंसा की जिनके कारण संस्थान में राजभाषा हिन्दी का विकास उल्लेखनीय रहा।

मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्र कुमार ने अपने भाषण में हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में जानने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि देश की अधिकतम आबादी हिन्दी बोलती और जानती है इसलिए हिन्दीतर भाषी भी हिन्दी जानेंगे तो उन्हें सुविधा होगी। राजभाषा के रूप में हिन्दी को सीखने का उन्होंने अनुरोध किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री अजय कुमार ने दर्शकों को अवगत कराया कि संघ सरकार की राजभाषा हिन्दी है और सह राजभाषा अंग्रेजी है। प्रावधान के अनुसार हिन्दी को कार्यालयों में इतना विकसित करना है कि वह अंग्रेजी को स्थानापन्न कर सके।

जब हिन्दी उस स्तर तक प्रचलित हो जायेगी तब ही अंग्रेजी को राजभाषा के रूप में समाप्त किया जा सकेगा। उन्होंने संस्थान में आयोजित हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नामों की घोषणा की और मुख्य अतिथि ने उन्हें पुरस्कृत किया। हिन्दी शिक्षण योजना भारत सरकार के अन्तर्गत प्रबोध/प्रवीण/प्राज्ञ हिन्दी भाषा पाठ्यक्रम एवं हिन्दी टंकण/आशुलिपि पाठ्यक्रम पास स्टाफ सदस्यों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। वर्ष के दौरान बेहतर हिन्दी कार्य करने के लिए स्टाफ के तीन सदस्यों को पुरस्कृत किया गया और प्रशंसा पत्र प्रदान किए गए। इनमें डॉ. पी के बरुआ को नीस्ट वेबसाइट को हिन्दी में तैयार करने के लिए, श्री राजेन शर्मा को पुस्तकालय में हिन्दी किताबें उपलब्ध कराने के लिए तथा जे सी बरुआ को हिन्दी आशुलिपि में सम्पूर्ण भारत में नौवां स्थान प्राप्त करने के लिए पुरस्कृत किया गया। समारोह प्रेरणादायक, उत्साहवर्द्धक एवं उपयोगी रहा।

आईआईसीबी में हिन्दी सप्ताह का आयोजन

भारतीय रासायनिक जीवविज्ञान संस्थान, कोलकाता में 9-14 सितम्बर 2010 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया। इस समारोह के अन्तर्गत 9 सितम्बर 2010 को टिप्पण मसौदा एवं निबन्ध लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

13 सितम्बर 2010 को आयोजित हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। वाद-विवाद का विषय था - लोक सेवा में महिलाओं के लिए आरक्षण अनिवार्य है।

तत्पश्चात् अपराह्न हिन्दी कार्यशाला का दूसरा सत्र सीजीसीआरआई के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, श्री प्रियंकर पालीवाल की अध्यक्षता में आरम्भ किया गया। उन्होंने हिन्दी वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन और तकनीकी शब्दावली पर व्याख्यान प्रस्तुत किये। उन्होंने तकनीकी शब्दावली के प्रयोग के कई शब्दों का सटीक प्रयोग बताया एवं शब्दों के विभिन्न उपयोग तथा उनके विभिन्न व्यावहारिक प्रयोगों का उदाहरण देते हुए सभी को नये-नये तकनीकी शब्दों से अवगत कराया एवं तकनीकी शब्दों के प्रयोग में आने वाली कठिनाईयों का हल बताया।

14 सितम्बर 2010 हिन्दी दिवस के अवसर पर प्रो. अमरनाथ शर्मा, हिन्दी विभाग, कोलकाता विश्वविद्यालय, कोलकाता मुख्य अतिथि के रूप में तथा श्री रामनारायण सरोज, उप-निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना, निजाम पैलेस, कोलकाता सम्मानीय अतिथि एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं के निर्णायक के रूप में आमंत्रित थे। संस्थान के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डॉ. समीत अड्या ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. टी.के. धर ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले कर्मचारियों/अधिकारियों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया।

हिन्दी दिवस पर आमंत्रित मुख्य अतिथि प्रो. अमरनाथ शर्मा जी ने हिन्दी के विकास तथा राजभाषा कार्यान्वयन में अभिरूचि रखते हुए कर्मचारियों के बीच प्रतियोगिताएं आयोजित करता है जिसकी सराहना करते हुए उन्होंने संस्थान में हिन्दी में काम करने की कार्य संस्कृति की प्रशंसा की। साथ ही साथ उन्होंने कहा कि हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसे देश के सभी लोग आसानी से समझ लेते हैं। श्री रामनारायण सरोज ने भी संस्थान के हिन्दी कार्यकलापों पर अपनी खुशी व्यक्त करते हुए इसे बनाए रखने के लिए सभी से आग्रह किया। इस दिन कई और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें निर्णायक के रूप में डॉ. सिद्धार्थ मजुमदार, तकनीकी अधिकारी, आईआईसीबी एवं श्री विजय शंकर मिश्रा, हिन्दी शिक्षक आमंत्रित थे। काव्य आवृत्ति एवं तत्काल भाषण जैसी प्रतियोगिताओं में कई अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ नाइपर के विद्यार्थियों ने भी हिस्सा लिया और पुरस्कार प्राप्त किए।

अन्त में संस्थान के श्री एस.के. चौधुरी, प्रशासनिक अधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिन्दी दिवस सम्पन्न हुआ। आईआईसीबी की वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्रीमती ए.नाग ने सफलतापूर्वक हिन्दी दिवस का संचालन किया।

सीसीएमबी में हिन्दी दिवस का आयोजन

हर वर्ष की तरह इस बार भी सीसीएमबी में दिनांक 14 सितम्बर 2010 को हिन्दी दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस संदर्भ में दिनांक 20 अगस्त 2010 को प्रशासन भवन के समिति कक्ष में निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में स्टाफ सदस्य तथा शोध छात्रों ने भाग लिया। निबन्ध प्रतियोगिता के विषय थेः 1) मानव जीवन को जीवविज्ञान की देन; 2) राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका।

23 अगस्त, 2010 को स्मृति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रशासन/भंडार एवं क्रय आदि अनुभागों के कर्मचारियों के साथ शोध छात्रों ने भी भाग लिया। 26 अगस्त को प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए टिप्पण और आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 6 सितम्बर को हिन्दी में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में शोध छात्रों आदि ने अत्यन्त उत्साह से भाग लिया। वाद-विवाद के विषय थेः औद्योगिकरण के नाम पर भू-अधिग्रहण कहां तक जायज़ और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में भाषा का बिगड़ता स्वरूप। 9 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर चुटकुलों के प्रस्तुतिकरण की प्रतियोगिता का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

दिनांक 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हैदराबाद के अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय के हिन्दी एवं भारत अध्ययन विभाग के प्रो. एवं अध्यक्ष डॉ. एम. वेंकटेश्वर समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने इस संदर्भ में **वर्तमान समय में सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी पूर्णतः सक्षम** विषय पर अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। केन्द्र के निदेशक, डॉ. सी एच मोहन राव ने सभी कर्मचारियों को अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य में हिन्दी का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। हिन्दी माह के दौरान आयोजित विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। हिन्दी दिवस की समाप्ति भव्य और रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुई। गीत, कविता और हास्य रचनाएं प्रस्तुत की गईं तथा शोध छात्रों द्वारा हास्य नाटक **मुन्ना भाई चला हैदराबाद** का मंचन किया गया।

सीबीआरआई में हिन्दी सप्ताह 2010 का आयोजन

सीबीआरआई में हिन्दी सप्ताह समारोह के दौरान मंच का एक दृश्य

केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की में 8 सितम्बर से 14 सितम्बर 2010 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। हिन्दी सप्ताह के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. सुधा रानी पाण्डे, कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, थीं तथा समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक प्रो. श्रीमन कुमार भट्टाचार्य ने की।

हिन्दी सप्ताह के दौरान हिन्दी आलेखन एवं टिप्पण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा **राजभाषा हिन्दी ही क्यों** विषय पर हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसी कड़ी में 13 सितम्बर को हिन्दी शब्दावली तथा शब्द प्रयोग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताएं हिन्दी एवं हिन्दीतर कार्मिकों के लिए पृथकतः आयोजित की गई। प्रतियोगिताओं में सर्वश्री अमन कुमार, आलोक शर्मा, अर्पण महेश्वरी, एच सी मदान, पी के एस चौहान, सुधीर कुमार, एस के सेनापति, रजिन्दर कुमार आदि ने पुरस्कार प्राप्त किए।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति प्रो. कर्नल स्वतंत्र कुमार समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे तथा समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक महोदय ने की। हिन्दी सप्ताह का आयोजन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ब्रजेश्वर सिंह की अध्यक्षता तथा वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी श्री आर सी सक्सेना के संयोजन से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

डॉ. एस. शिवराम को अनुप्रयुक्त विज्ञान में वर्ष 2007 का गोयल पुरस्कार

एस. शिवराम प्रोफेसर गोवर्धन मेहता से पुरस्कार ग्रहण करते हुए

डॉ. एस. शिवराम, निदेशक, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (सीएसआईआर, एनसीएल, पुणे को अनुप्रयुक्त विज्ञान के क्षेत्र में वर्ष 2007 का गोयल पुरस्कार प्रदान किया गया है।

डॉ. शिवराम (निदेशकः2002 - वर्तमान) को बहुलक विज्ञान तथा उसके औद्योगिक अनुप्रयोग में निरन्तर योगदान के लिए पिछले तीन दशकों से जाना जाता रहा है। डॉ. शिवराम अब उन विशिष्ट वैज्ञानिकों यथा डॉ. आर.ए. माशेलकर, डॉ. के. कस्तूरीरंगन, प्रोफेसर जे.बी जोशी, डॉ. एन.के. गांगुली तथा अन्यों की श्रेणी में सम्मिलित हो गये हैं, जिन्हें इससे पूर्व यह सम्मान प्राप्त हो चुका है।

गोयल पुरस्कार में नकद पुरस्कार, स्वर्ण पदक तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। डॉ. शिवराम को यह पुरस्कार प्रो. गोवर्धन मेहता द्वारा 19 अप्रैल 2010 को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया गया।

सीएसआईआर टैक्नोफैस्ट-2010 को स्वर्णपदक प्राप्त

सीएसआईआर टैक्नोफैस्ट-2010 ने सार्वजनिक क्षेत्र, ईपीसीएस तथा कम्युनिटी बोर्ड और बैंक वर्ग में आईआईटीएफ-2010 में सर्वश्रेष्ठ पैवेलियन का स्वर्ण पदक प्राप्त किया। दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने डॉ. दलजीत एस बेदी, प्रमुख, यूएसडी-सीएसआईआर को स्वर्ण पदक तथा प्रमाण पत्र प्रदान किया। यह आयोजन शाकुंतलम थियेटर, प्रगति मैदान में शनिवार, 27 नवम्बर 2010 को आयोजित किया गया। डॉ. सुबास पाणि, अध्यक्ष तथा प्रबन्ध निदेशक, आईआईटीएफ तथा कई अन्य विशिष्ट व्यक्ति इस समारोह में उपस्थित थे।

दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने सीएसआईआर टैक्नोफैस्ट-2010 के लिए डॉ. डी.एस. बेदी, प्रमुख, विज्ञान प्रसार इकाई (सीएसआईआर) को स्वर्ण पदक प्रदान किया। सीएसआईआर टैक्नोफैस्ट-2010 को यह स्वर्ण पदक 30वें अन्तरराष्ट्रीय व्यापार मेले (आईआईटीएफ) 2010 में सार्वजनिक क्षेत्र, ईपीसीएस, सामुदायिक बोर्ड एवं बैंको की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ पैवेलियन का पुरस्कार मिला।

पुरस्कार ग्रहण करने के बाद डॉ. डी.एस. बेदी ने बताया कि **सिर्फ पैवेलियन को संवारने में ही नहीं, बल्कि बेहतरीन सामग्री देने तथा लोगों की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु कड़ी मेहनत की गई। कई तकनीकी कार्यक्रम आयोजित किये गये तथा वैज्ञानिक समुदाय, उद्योग एवं जनसामान्य को आकर्षित करने के लिए योजनाबद्ध कार्यक्रम तैयार किया गया। आईपीटीओ द्वारा प्रदत्त यह पुरस्कार इन्हीं प्रयासों की पहचान तथा उद्देश्य प्राप्ति की सफलता का प्रतीक है।** यहां पर ये भी उल्लेखनीय है कि सीएसआईआर टैक्नोफैस्ट-2010 का आयोजन आधुनिक अनुसंधान क्षमता का प्रदर्शन करने के लिए पहली बार इतने बड़े स्तर पर किया गया था। सीएसआईआर की लगभग सभी अनुसंधान प्रयोगशालाओं को हॉल नं.11, आईआईटीएफ, प्रगति मैदान में 5000 वर्ग मी. में 15 थीम पैवेलियनों में समायोजित किया गया था।

सीएसआईआर टैक्नोफैस्ट-2010 की संकल्पना, कार्यान्वयन तथा प्रबंधन फिक्की तथा सीएसआईआर द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। श्री सुमित गुप्ता, प्रमुख, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी/फिक्की इनोवेशन ने कहा। **हम इस बात को लेकर बहुत ही ज्यादा उत्साहित हैं और हम सीएसआईआर के साथ भविष्य में भी इस प्रकार की साझेदारी के प्रयासों में के विषय में सोच रहे हैं। ये बृहद स्तर का कार्य था जिसमें वैज्ञानिक, उद्योगपति, युवा तथा सामान्य जनता सम्मिलित हुई। आईआईटीएफ-2010 द्वारा प्रदत्त पुरस्कार समग्र रूप से किये गये इन सभी प्रयासों के लिए एक पहचान तथा आभार है।**

इस प्रदर्शनी का आयोजन 15 थीम पैवेलियनों द्वारा विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में सीएसआईआर की विशेषज्ञता का प्रदर्शन करने के लिए किया गया था।

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए दीक्षा बिष्ट द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निस्केयर प्रेस द्वारा मुद्रित।
संपादकः दीक्षा बिष्ट; सह संपादकः विनीता सिंघल; अनुवादः मीनाक्षी गौड़; डिजाइन एवं ले आउटः सरला दत्ता; कम्पोजिंगः कृष्णा
फोनः 25848702, 25846301, 2584303, 25842990, 25846304-7/361 ग्रामः PUBLIFORM, New Delhi; फैक्सः 25847062
ई-मेलः deeksha@niscair.res.in वेबसाइटः http://www.niscair.res.in पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर सम्पर्क करें